प्र० बैतताल पच्चीसी मे कथानक रूढ़ियो के आधार पर नीतिपरक बातो को बताते हुए इस पच्चीसी का सृजन किया गया है इसे सोदाहरण समझाइये?

कथानक रूढ़ियों का पालन करते हुए, बैतताल पच्चीसी की कथाये घटनाक्रम के आधार पर आगे बढ़ती है। जिससे कथा का विस्तार हुआ है। कथानक रूढ़ियो में स्वप्न आना, अभिशाप वरदान, शकुन अपशकुन, पुन जीवन सम्बन्धी प्रसंग, लोक विश्वास के आधार पर लोक रूढ़ियो के अन्तर्गत आते है, बैतताल पच्चीसी मे अंतर्गुम्फित पच्चीस कथाएँ, उपर्युक्त कथानक रूढ़ियों से बन्धी हुई है और कथा का विस्तार इन्ही रूढ़ियो के आधार पर हुआ है।

प्रथम कथा :- इसमे योगी द्वारा आम देना और राजा द्वारा आम को सुरक्षित रखना और उस आम से रत्न पैदा होना, तत्पश्चात राजा को एकान्त ले जाकर बैतताल से सम्बन्धीत बाते कहना जो सिद्ध पुरुष माना गया है जहाँ राजकुमार और राजकुमारी मंदिर मे एक दूसरे को देखकर शकुन के आधार पर वर प्राप्ति होती है और अप्सरा का वर्णन लोक रूढ़ी का ही कारण है अर्थात उपर्युक्त कथानक रूढ़ियों इस कथा को विस्तार रूप देती है। इसलिए कथा मे कथानक रूढ़ियों का पालन हुआ है।

दूसरी कथा :- युवती को सपदर्श करना और उनका पुनरजीवित करना और साधना द्वारा पुनः जीवन देना जो लोक जीवन मे और कथा को विस्तार रूप देती है

तीसरी कथा :- मे तोते के माध्यम से बात करना और निन्दा करना एक लोक विश्वास के आधार पर कथानक रूढ़ी का पालन हुआ है।

चौथी :- इस कथा मे चाकर की पत्नि और पुत्र का पुर्नजीवित होना रूढ़ी वादी कथा को विस्तारित करना है।

पाँचवी कथा :- इस कथा में कन्या जो बहुत गुणों वाली होती है। उसको राक्षस ले जाती है। और तीन राजकुमार आते है जिसमे एकतीनों कालों को जानने वाला होता है। यह रूढ़िवादी प्रवृति है जबकि राक्षसों का होना सत्य नहि है। यह पौराणिक बाते है।

छठी कथा :- सभी कथा लोक प्रचलित बातों के ऊपर टीकी है। इसकथा मे एक राजा देवी की पूजा करने अन्दर जाता है और उसका सिर धड़ से अलग होता है। बाहर

Scanned by CamScanner

से आकर उसका मित्र पूजा को करने लगता है तो उससे प्रसन्न हो कर देवी उनको जिंदा कर देती है। लेकिन यह तो सिर्फ कहने की बाते है और उसके पति के धड़ से मित्र का सिर जुड़ जाता है और मित्र के कारण इस कथा को आगे बढ़ाने के लिए वर्णन किया गया है

सातवी कथा :- इसमे भी शास्त्रो जैसी बाते पौराणिक है

आठवी कथा :- इसमे चोर का मिलना और फिर छोड़ देना, बहन बनाना ये बाते भी सभी पौराणिक है

दसवी कथा :- इस कथा मे राजा का धर्म बदलना, राजा का जलक्रिडा करना और चंद्रावती के हाथ लगाना फिर रानियों के ऊपर छिंटो का गिरना एक के हाथों का दर्द करना, एक का छाले होना, यह सब पहले की बाते है जो रूढ़िवादी है।

ग्यारहवी कथा :- इस कथा में कल्पवृक्ष के ऊपर से रत्न जड़ित पलंग का निकलना और उसके ऊपर मोतियों का गुच्छा होना और फिर उस पर बैठी हुई देवांगना वो भी वीणा बजाती हुई एक लोक प्रचलित बातों के माध्यम से कथा को आगे बढ़ाया है। अंधेरी चवदस की बातें और राक्षस का आना यह रूढ़िवादी बाते है उस देवांगना के पिता द्वारा दिये गये श्राप से मुक्ति मिलना आदि है।

बारहवी कथा :- इस कथा में पुरोहित और उसकी पत्नि छत पर होते है। तो आकाश मार्ग से एक राक्षस आता है और वो पत्नि को ले जाता है।

चौदहवी कथा :- इस कथा मे शशिदेव मूलदेव ब्राह्मण को गुटी देना वह स्त्री बन गया और वो गुटी निकालने पर वापिस पुरूष वेष धारण करना यह लोक प्रचलित बाते ही है।

पन्द्रहवी कथा :- कथा में राजा द्वारा भगवती जी की आराधना करना क्यों उनके कोई पुत्र नही था। और पूजा अर्चना से श्री भगवती का प्रसन्न होना और कहना कि तुम्हारे पुत्र होगा तो वह बहुत ही धर्मात्मा होगा यह रूढ़िवादी बात है

सोलहवी कथा :- इस कथा में एक स्त्री के पुत्र को राक्षस पकड़ कर ले जाता है और राजा बचाने जाता है और राक्षस फिर दोनों को छोड़ देता है। यह सब पुरानी बनावटी बाते है।

सत्तरहवी कथा :- उन्मादिनी राजा और उन्मादिनी के पति तीनो का एक दूसरे

Scanned by CamScanner

के विरह में मर जाना यह लोक प्राचीन बाते है।

अठारवी कथा :— इस कथा मे एक ब्राह्मण जो सिद्धि प्राप्त था उसके आराधना से देवांगना का आना और महल की रचना करना और फिर राजपुत्र को भोजन करवाना एक पौराणिक कथा है।

उन्नीसवी कथा :— इस कथा मे पुत्र द्वारा पिण्ड देना पर तीन हाथो का पानी से आ एक लोक रूढ़ी बात है

बिसवी कथा :— इससे राजा की पत्नि को राक्षस द्वारा पकल ले जाना और सा वर्ष के पुत्र के द्वारा बदले में वापिस दे देना।

इक्किसवी कथा :— इस कथा के आधार पर अपनी-अपनी विद्या से राजा के ब्राह्मण के चारों पुत्र सिंह के कंकाल को जिन्दा कर देते है यह कथा पूर्ण कल्पना पर आधारित करके आगे बढ़ाई गई है

बाइसवी कथा :— इस कथा मे एक राजा बूढ़ा हो गया उसको फिर से जवान होने की इच्छा हुई ऐसा सोचकर वो एक जोगी से मिला जोगीने उसे जवान होने की दवा बताई। जिससे वह अपने पुराने बुढ्ढे शरिर को त्यागकर जवान शरिर में प्रवेश लगा तब एक बार हंसा फिर रोया तब बेताल ने प्रश्न किया कि राजा हंसा क्यो फिर रोया क्यो। फिर राजा कहता है कि जिस शरिर ने बचपन मे बहुत प्यार पाया और साथियो का साथ पाया और चन्दन लगाया और उस शरिर को छोड़ते दुःख हुआ तो रोया। और सोचा की नयी काया (शरिर) पाया है तो हंसा था। इसमे एक शरिर से दूसरे शरीर मे प्रवेश की बात एक रुढ़ीवादी भी है और कल्पना भी है

तेइसवी कथा :— इस कथा मे ब्राह्मण के पुत्रों की चतुराई को परखा जाता है कि स्त्री के मुंह मे से बकरी के दूध की बदबू आना और बिस्तर के नीचे एक बाल का होना। चावल मे से शमशान की राख की वास आना ये सब अंधविश्वास की बाते है जिसके माध्यम से कथा को आगे बढ़ाया जाता है

चोइसवी कथा :— इस कथा मे एक ब्राह्मण का पुत्र जो विवाह करते ही साँप के काटने से मर जाता है और फिर उसकी पत्नि जो बहुत ही सुन्दर होती है वो भी सत्ती होने के लिए खड़ी होती है। तब एक योगी आता है और

DATE : / /

चिता मे कुद जाता है। जिससे गुणवन्त जिंदा हो जाता है। तब सब सोचते है कि गुणवंत के अन्दर योगी की जान है। तब बैत्ताल पूछता है सत्ती हुई कौन नही तब विक्रम कहता है। शरीर के लिए शरीर को नहि जलाया जाता। सत्ती के शरीर उसके पति के साथ जलने से ही पूर्ण होता है।

इसमे भी योगी का चिता मे जलना और जिन्दा होना भी एक काल्पनिक रूढ़िवादिता है।

Scanned by CamScanner